न्यूज़ टुडे

पूर्व एवं पश्चिम के उद्योगों को दक्षिण भारत से जोड़ने के लिए 4,000 किलोमीटर लंबे समर्पित मालभाड़ा गलियारे (Dedicated Freight Corridor: DFC) हेतु योजना निर्मित की जा रही है

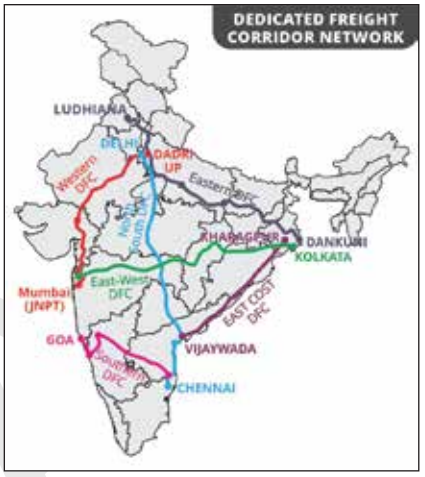

- **भारतीय रेलवे, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के प्रमुख पत्तनों** के माध्यम से **देश के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों में स्थित औद्योगिक क्षेत्रों** को दक्षिण भारत से जोड़ने के लिए लगभग 4,000 किलोमीटर लंबे DFC के निर्माण की योजना बना रहा है। ये DFC हैं:
  - **पूर्वी तट गलियारा (East Coast corridor) (1,115 कि.मी.):** खड़गपुर (पश्चिम बंगाल) से विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) तक।
  - **पूर्व–पश्चिम गलियारा (East-West corridor) (1,673 कि.मी.):** इसमें भुसावल–नागपुर–खड़गपुर–दनकुनी (कोलकाता के पास) मार्ग, और राजखरवासन–कालीपहाड़ी–अंदल (पश्चिम बंगाल) मार्ग शामिल हैं।
  - **उत्तर दक्षिण उप–गलियारा (North South sub-corridor) (975 कि.मी.):** विजयवाड़ा–नागपुर–इटारसी (मध्य प्रदेश) मार्ग।
- **उच्च गति और अत्यधिक क्षमता युक्त रेलवे गलियारे** को DFC की संज्ञा दी जाती है। ये गलियारे विशेष रूप से माल (वस्तुएँ और जिंस) की सुगम आवाजाही के लिए निर्मित किए जाते हैं।
  - डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (DFCCIL), **रेल मंत्रालय के तहत एक विशेष प्रयोजन वाहन (Special Purpose Vehicle)** है। यह DFC के नियोजन और विकास, वित्तीय संसाधनों का संग्रहण, निर्माण आदि कार्य संपन्न करता है।
- **DFCCIL पहले से ही दो DFCs का निर्माण कर रहा है:**
  - **पूर्वी मालभाड़ा गलियारा:** लुधियाना से दनकुनी (पश्चिम बंगाल) तक।
  - **पश्चिमी मालभाड़ा गलियारा:** दादरी (उत्तर प्रदेश) से जवाहरलाल नेहरू पत्तन (मुंबई) तक।
- **DFCs के लाभ:**
  - ये गलियारे **मालगाड़ी के परिचालन में तेजी लाकर** परिवहन की इकाई लागत (यूनिट कॉस्ट) को कम करने में सहायक होते हैं और साथ ही, इनसे उत्पादकता में भी वृद्धि होती है।
  - इससे **माल ढुलाई के लिए पृथक अवसंरचना** को बढ़ावा मिलता है।
  - इससे परिवहन की अत्यधिक मांग की पूर्ति हेतु **अतिरिक्त रेल अवसंरचना का निर्माण** संभव होता है।

सरकार, कृषि रसायन (Agrochemical) क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने हेतु विभिन्न प्रोत्साहन प्रदान करने की योजना बना रही है

- कृषि रसायन के क्षेत्र में घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न प्रस्तावों में कर प्रोत्साहन, अवसंरचना विकास, आयात प्रतिबंध आदि शामिल हैं।
  - **भारत** संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और चीन के बाद **कृषि रसायनों का चौथा सबसे बड़ा उत्पादक** देश है। भारत कृषि रसायनों का निवल निर्यातक देश है।
  - हालांकि, भारत, **चीन** से विभिन्न वर्गों के कृषि रसायनों (यथा– मूलभूत और उन्नत कृषि रसायन) का **आयात** करता है तथा इस कुल आयात का मूल्य 3,000 करोड़ रुपये से भी अधिक है।
- कीटों को नियंत्रित करने के विविध तरीकों के आधार पर कृषि रसायनों को मुख्यतः कीटनाशी (insecticide), शाकनाशी (herbicide), कवकनाशी (fungicide), कृंतकनाशी (rodenticide), जैव–कीटनाशक (bio-pesticide) और सूत्रकृमिनाशी (nematicide) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
  - इनका फसलोत्पादन बढ़ाने, पौधों के विकास में वृद्धि करने, मृदा की अम्लीयता को निष्प्रभावी (neutralize) बनाने और फसल को कीटों से बचाने के लिए आधुनिक कृषि में व्यापक पैमाने पर उपयोग किया जाता है।
- **कृषि रसायन उद्योग के समक्ष विद्यमान समस्याएं:** कच्चे माल की लागत में वृद्धि, नए अणुओं के लिए पंजीकरण में समय का अधिक व्यय, पर्यावरण प्रदूषक की उच्च उपचार लागत और किसानों के मध्य जागरूकता/शिक्षा का अभाव।
- **कृषि रसायन क्षेत्र के लिए अवसर:** खाद्य की बढ़ती माँग, बागवानी और पुष्पकृषि की मांग में वृद्धि, निर्यात क्षमता में बढ़ोतरी, जैव–कीटनाशकों के उपयोग में वृद्धि आदि।
- **उद्योग जगत की ओर से मांग:** कृषि रसायनों के लिए GST दर को 12% से घटाकर 5% करना; निर्यात प्रोत्साहन प्रदान करना {जैसे– निर्यात आगत कर (export input tax) में छूट}; कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2020 (Pesticides Management Bill, 2020) से मूल्य नियंत्रण खंड को हटाना, क्योंकि यह नये निवेश को हतोत्साहित करता है आदि।

जनजातीय कार्य मंत्रालय (Ministry of Tribal Affairs) द्वारा विभिन्न पहलों की घोषणा की गई

- **जनजातीय स्वास्थ्य और पोषण पोर्टल – 'स्वास्थ':** यह जनजातीय स्वास्थ्य और पोषण पर ई–पोर्टल है, जो भारत की **संपूर्ण जनजातीय आबादी की स्वास्थ्य और पोषण संबंधी जानकारी** को एक ही मंच पर उपलब्ध कराएगा।
  - यह साक्ष्य, विशेषज्ञता और अनुभवों के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाने के लिए भारत के विभिन्न हिस्सों से एकत्र की गई **नवाचारी प्रक्रियाओं (innovative practices), शोध रिपोर्टों आदि को प्रदर्शित** करेगा।
- **राष्ट्रीय प्रवासी पोर्टल (National Overseas Portal) और राष्ट्रीय जनजातीय फ़ेलोशिप पोर्टल (National Tribal Fellowship Portal):** ये दोनों पोर्टल जनजातीय छात्रों के लिए अधिक पारदर्शिता और सुगम सूचना सुनिश्चित करेंगे।
- **"आदिवासियों का सशक्तीकरण, भारत का रुपांतरण" (Empowering Tribals, Transforming India):** यह एक ऑनलाइन निष्पादन डैशबोर्ड है। दक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने तथा अनुसूचित जनजातियों को सशक्त बनाने की दिशा में कार्य करने के लिए डिजिटल इंडिया के तहत इसकी स्थापना की गयी है।
- **आलेख (ALEKH):** यह स्वास्थ्य और पोषण पर ई–न्यूज लेटर (e-newsletter) है।
- **जनजातीय लोगों की स्वास्थ्य स्थिति:**
  - पांच वर्ष से कम आयु का लगभग प्रत्येक दूसरा जनजातीय बालक **गंभीर अल्प–पोषण (chronic under-nutrition)** से पीड़ित है और अल्प–वजनी है तथा **प्रत्येक चौथे बच्चे में से एक दुबलेपन (wasting) से ग्रसित** है।
  - आधे से अधिक **आदिवासी बच्चे और प्रजनन आयु वर्ग की महिलाएं** रक्ताल्पता से ग्रसित हैं।
  - जन्म लेने वाले प्रत्येक 1,000 बच्चों में से लगभग 44 की एक वर्ष से पहले ही मृत्यु हो जाती है।
  - जनजातीय लोग **मलेरिया, सिकल सेल रोग (sickle cell disease) आदि बीमारियों** से काफी अधिक प्रभावित होते हैं।

सरकार द्वारा निर्धारित इथेनॉल सम्मिश्रण संबंधी लक्ष्य और उनकी प्राप्ति की स्थिति

- हाल ही में, केंद्र सरकार ने वर्ष 2020–21 में चीनी मिलों के लिए 362 करोड़ लीटर इथेनॉल की आपूर्ति करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।
  - सरकार द्वारा, वर्ष 2003 में प्रारंभ किए गए **इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम (Ethanol Blending Programme: EBP)** के तहत **वर्ष 2022 तक पेट्रोल के साथ 10% बायो–इथेनॉल के सम्मिश्रण का लक्ष्य** निर्धारित किया गया है तथा इसे **वर्ष 2030 तक बढ़ाकर 20% किया जाना है।**
  - **राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति, 2018 (National Policy on Biofuels, 2018)** में भी समान सांकेतिक लक्ष्यों का उल्लेख है।
- बायो–इथेनॉल एक प्रकार का ऐल्कहॉल है। इसे **कार्बोहाइड्रेट के किण्वन तथा फसलों और अन्य पौधों व घास की सेल्यूलोसिक सामग्री** से भी प्राप्त किया जाता है।
  - वर्तमान में पेट्रोल में **5% इथेनॉल** सम्मिश्रित किया जाता है।
- **उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने में चुनौतियाँ:**
  - **बायो–इथेनॉल का घरेलू उत्पादन काफी कम है।** उदाहरणार्थ– वर्ष 2018–19 में चीनी मिलें बायो–इथेनॉल की 3.3 बिलियन लीटर की मांग की तुलना में केवल 1.9 बिलियन लीटर ही आपूर्ति करने में सक्षम थीं।
  - **जैव ईंधन संयंत्रों में निवेश करने के लिए अनेक चीनी मिलों की वित्तीय स्थिति अनुकूल नहीं है।**
  - इसी प्रकार वर्तमान में **कृषि अपशिष्ट का मूल्य बहुत अधिक** है, जो निजी निवेशकों के लिए निवेश में बाधक सिद्ध हो रहा है।
- **उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने करने हेतु सुझाव:** उन स्थलों पर संग्रहण केंद्रों का निर्माण किया जाना चाहिए, जहां किसान अपने कृषि अपशिष्टों का निस्तारण कर सकें; कृषि अपशिष्ट के लिए मूल्य निर्धारण की व्यवस्था की जानी चाहिए; इथेनॉल सम्मिश्रण को आकर्षक बनाने वाले विशेष कर उपायों की घोषणा, अनिवार्य सम्मिश्रण का प्रावधान आदि।

महाराष्ट्र, संरक्षण के प्रतीक के रूप में 'स्टेट मैंग्रोव ट्री' (राजकीय मैंग्रोव वृक्ष) की घोषणा करने वाला प्रथम भारतीय राज्य बन गया है

- हाल ही में, महाराष्ट्र सरकार ने राज्य की तटरेखा पर पाए जाने वाली एक सदाबहार मैंग्रोव प्रजाति **सोननेरेशिया अल्बा (Sonneratia alba) या मैंग्रोव एप्पल (mangrove apple) को राजकीय मैंग्रोव वृक्ष** के रूप घोषित किया है।
  - यह **ज्वारीय, दलदली भूमि** पर उगता है तथा **भू–अपरदन को रोकने** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
  - मैंग्रोव वनों की इस प्रजाति का वितरण पश्चिमी तट और ओडिशा के कुछ हिस्सों तक ही सीमित है।
- एक मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र वस्तुतः **स्थलीय वनों (terrestrial forests) और जलीय समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों (aquatic marine ecosystems)** के मध्य अंतर्क्रिया स्थल होता है। ये लवण–सहिष्णु वनस्पतियां हैं, जो नदियों और ज्वारनदमुखों (estuaries) के अंतर्ज्वारीय (intertidal) क्षेत्रों में विकसित होते हैं।
- **मैंग्रोव वनों का महत्व:**
  - ये अधिकांश **वाणिज्यिक मछलियों और क्रस्टेशियंस** (कड़े खोल वाले जीव) के लिए प्रजनन और संवर्धन स्थल के रूप में कार्य करते हैं तथा उन्हें खाद्य उपलब्ध करवाते हैं।
  - ये **तटरेखाओं को संरक्षण** प्रदान करते हैं; चक्रवात और सुनामी जनित आपदाओं के प्रभाव को न्यून करते हैं तथा मृदा अपरदन को रोकते हैं।
  - ये प्रायः अन्य वनों की तुलना में **अधिक मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड का भंडारण** करते हैं।
- हाल ही में, **संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) के नैरोबी अभिसमय** ने पश्चिमी हिंद महासागर क्षेत्र के लिए मैंग्रोव पारिस्थितिकी–तंत्र पुनर्स्थापना (Mangrove Ecosystem Restoration) पर दिशा–निर्देश निर्मित किए हैं।
  - इन दिशा–निर्देशों का उद्देश्य इस क्षेत्र के **निम्नीकृत मैंग्रोव पारिस्थितिकी–तंत्र के पुनर्स्थापना का समर्थन** करना और कोविड–19 के आर्थिक प्रभावों से उबरने में सहयोग प्रदान करना है।
  - **नैरोबी अभिसमय (Nairobi Convention) का लक्ष्य** स्वस्थ नदियों, तटों और महासागरों के साथ एक समृद्ध पश्चिमी हिंद महासागर क्षेत्र को बढ़ावा देना है। उल्लेखनीय है कि **भारत इस अभिसमय का भाग नहीं है।**

अन्य सुर्खियाँ

सागर (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) {SAGAR (Security and Growth for All in the Region)}	❍ भारत सरकार ने अपने 'सागर' (SAGAR) दृष्टिकोण के तहत **मॉरीशस को उसके दक्षिण–पूर्वी तट पर** तेल रिसाव से निपटने में सहायता प्रदान करने के लिए **तकनीकी उपकरण और सामग्री उपलब्ध करवाई** है। ❍ भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा **वर्ष 2015** में 'सागर' विज़न का उल्लेख किया गया था। इसके कुछ **प्रमुख उद्देश्य** निम्नलिखित हैं: ➢ हमारी मुख्य भूमि और द्वीप समूहों की सुरक्षा करना, **एक सुरक्षित और स्थिर हिंद महासागर सुनिश्चित करना** तथा अपनी क्षमताओं को दूसरों के लिए उपलब्ध कराना। ➢ हमारे समुद्र तटवर्ती पड़ोसी देशों के साथ **आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ करना।**
भारत में यूनाइटेड किंगडम द्वारा 3 मिलियन पाउंड के इनोवेशन चैलेंज फंड की शुरुआत की गयी {United Kingdom (UK) launches £3 million innovation challenge fund in India}	❍ इस कोष का उद्देश्य कोविड–19 महामारी और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए **शैक्षणिक एवं उद्योग क्षेत्र के वैज्ञानिकों को सहायता प्रदान करना है।** ❍ इस कोष के तहत दिए गए अनुदान तकनीकी साझेदारी के लिए की गई पहल का भाग हैं। इस साझेदारी को **टेक क्लस्टर्स** (Tech Clusters) के नाम से जाना जाता है। ❍ ये टेक क्लस्टर्स विकासात्मक अवरोधों को समाप्त कर **भारतीय टेक क्लस्टर्स के विकास में सहायता प्रदान करेंगे।**
नगर वन योजना (Nagar Van Scheme)	❍ हाल ही में, **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 'नगर वन' या शहरी वन योजना (Urban Forest scheme)** के कार्यान्वयन के लिए ईटानगर का चयन किया है। ❍ इस योजना का उद्देश्य आगामी पांच वर्षों में **देश भर में 200 शहरी वन विकसित करना** है। इसमें जन भागीदारी के साथ–साथ वन विभाग, नगर निकायों, गैर–सरकारी संगठनों, कॉर्पोरेट तथा स्थानीय नागरिकों के मध्य सहयोग पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
वामन ग्रह सेरेस को "ओशन वर्ल्ड" का दर्जा दिया गया (Dwarf Planet Ceres given status of an "ocean world")	❍ इसे यह दर्जा इसलिए प्रदान किया गया है, क्योंकि वैज्ञानिकों ने यह सुनिश्चित किया है कि सेरेस पर **लवणीय–जल का एक भंडार मौजूद है,** जो इसे "जल समृद्ध" (water rich) बनाता है। ❍ सेरेस एक वामन ग्रह है, जो **मंगल और बृहस्पति के मध्य क्षुद्रग्रह पेटी (asteroid belt)** में अवस्थित है। ❍ **वामन ग्रह के लिए निर्धारित मापदंड:** ➢ ग्रह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करता हो; ➢ वह किसी ग्रह का कोई उपग्रह न हो; ➢ इसकी कक्षा पड़ोसी ग्रह की कक्षा को न काटती हो; और ➢ इसमें गुरुत्वाकर्षण के लिए पर्याप्त द्रव्यमान होना चाहिए, जो इसे लगभग गोलाकार आकृति प्रदान करता हो।
मिल्की वे (दुग्ध मेखला) के सदृश आकाशगंगा की खोज की गई (Milky Way look alike Galaxy found)	❍ पृथ्वी से अत्यधिक दूरी पर **'मिल्की वे' के सदृश दृष्टिगोचर होने वाली एक अन्य आकाशगंगा** (SPT0418-47) की खोज की गई है। यह पृथ्वी से 12 बिलियन प्रकाश वर्ष दूर है। ❍ एक आकाशगंगा तारों, गैस और धूल का एक विशाल समूह है जो **गुरुत्वाकर्षण द्वारा एक साथ आबद्ध** होते हैं। ➢ सूर्य (एक तारा) और इसके आसपास के सभी ग्रह एक आकाशगंगा के भाग हैं। इस आकाशगंगा को 'मिल्की वे' के नाम से जाना जाता है। ❍ सुदूरवर्ती आकाशगंगाओं का अध्ययन यह उत्तर खोजने में सहायता प्रदान करेगा कि **बिग बैंग के उपरांत आकाशगंगाएँ कैसे निर्मित और विकसित हुईं।**
लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर, ओडिशा (Lingaraj Temple, Bhubaneswar, Odisha)	❍ ओडिशा सरकार ने **11वीं शताब्दी के लिंगराज मंदिर की पुनर्सज्जा (facelift) की घोषणा** की है। ❍ इस मंदिर का निर्माण सोम वंश के शासक ययाति केसरी (Jajati Keshari) द्वारा करवाया गया था और यह **भगवान शिव को समर्पित है।** ❍ भगवान शिव के लिंग को 'स्वयंभू' (स्वयं उत्पन्न) के रूप में स्वीकार किया जाता है और उसका **भगवान शिव और भगवान विष्णु दोनों के रूप में पूजन होता है।** ❍ यह मंदिर ओडिशा में **शैव और वैष्णव संप्रदायों के मध्य समन्वय का प्रतीक** है। ❍ यह मंदिर स्थापत्य कला की **कलिंग शैली** से संबंधित है।
मलयालम नव वर्ष (Malayalam New Year)	❍ मलयालम पंचांग में **चिंगम माह** (Chingam month) के पहले दिन को नव वर्ष के प्रथम दिन के रूप में मनाया जाता है। ❍ इसे **पुथुवार्षम** (Puthuvarsham) के नाम से भी जाना जाता है।

8468022022, 9019066066
www.visionias.in
दिल्ली लखनऊ जयपुर हैदराबाद पुणे अहमदाबाद चंडीगढ़
/c/VisionIASdelhi /Vision_IAS /visionias_upsc /VisionIAS_UPSC